❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्।

अथर्व. 5/3/4

हे प्रभो! मैं पापी न बनूं।

O God! I should never become a sinner.

वर्ष 42, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 जुलाई, 2019 से रविवार 7 जुलाई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

म्यांमार (बर्मा) में आर्यसमाज के बढ़ते कदम : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार - 2017 से आई जागृति

सभा की ओर से म्यांमार (बर्मा) की आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के निरीक्षण

जियावाड़ी आर्यसमाज की नई खरीदी डेढ़ एकड़ भूमि पर बनेगा - आर्य गुरुकुल एवं छात्रावास

शिवपुर में आर्यसमाज के दो मंजिला भवन का हुआ उद्घाटन

जयपुर एवं तठेगौं आर्यसमाज के निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार-2017 में महाशय धर्मपाल जी द्वारा दी गई प्रेरणा से बन रहा है जियावाड़ी (म्यांमार) में गुरुकुल

यह सर्वविदित है कि सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के विश्व स्तरीय चिंतन मनन के साथ-साथ आर्यसमाज के उत्थान हेतु विविध योजनाओं और प्रस्तावों को आर्यजनों के विशाल जनसमूह के समक्ष पारित किया गया था। इस अवसर पर गुरुकुलों की वर्तमान स्थिति का आकलन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य पर विशेष जोर देते हुए वर्तमान में गतिशील गुरुकुलों को सुदिशा देने व विदेशों में भी कई स्थानों पर गुरुकुल निर्माण पर बल दिया गया। 2018 के सम्मेलन को अभी एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार ने आर्य समाज जियावाड़ी के निकट आर्य गुरुकुल के निर्माण हेतु डेढ़ एकड़ भूमि का चयन कर खरीदी कर ली है। यह अनुपम सेवाभावी कार्य दर्शाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार (बर्मा) अपने स्तर पर प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय पहल कर रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के अनुरोध पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी 22 जून 2019 को चार दिवसीय यात्रा पर जब म्यांमार की धरा पर पहुंचे तो वहां आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा के अधिकारियों ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया। श्री विनय आर्य जी ने लगातार 4 दिनों तक म्यांमार की विभिन्न आर्यसमाजों में यज्ञ, प्रवचन, शंका समाधान, गुरुकुल की भूमि का निरीक्षण, आर्य समाज के भवन उद्घाटन आदि कार्यक्रमों में भाग लिया। इस यात्रा में श्री सन्दीप आर्य जी भी साथ में रहे। आप एक-एक दिन में तीन-तीन आर्य समाजों में गए और वहां आर्यजनों ने विशेष शंका समाधन, सत्संग और संगोष्ठियों के आयोजन किए, जिनमें आर्य समाज के उज्ज्वल भाविष्य की योजनाओं पर गहन चिंतन मनन भी किया गया।

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज जियावाड़ी के निकट गुरुकुल के लिए क्रय की गई भूमि का निरीक्षण करते श्री विनय आर्य जी। साथ में हैं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी, श्री अश्विन अरोड़ा जी, श्री प्रदीप गुलाटी जी एवं अन्य क्षेत्रीय अधिकारी

आर्यसमाज जयपुर, जियावाड़ी के निर्माणाधीन भवन का निरीक्षण

आर्यसमाज जियावाड़ी में आयोजित क्षेत्रीय आर्यसमाजों की बैठक को सम्बोधित करते आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य। इस अवसर पर क्षेत्रीय आर्यसमाजों के अधिकारियों को आर्यसमाजों में स्थापित करने हेतु महर्षि दयानन्द जी का चित्र एवं साहित्य भेंट करते अधिकारीगण।

आर्यसमाज शिवपुर के नव निर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर ध्वजारोहण एवं जयघोष करते आर्यजनों के साथ श्री विनय आर्य जी। इस अवसर पर आयोजित जन सभा में छोटी बच्ची की सुन्दर प्रस्तुति से खुश होकर उसे परिवार सहित पुरस्कृत करते म्यांमार सभा के प्रधान श्री अशोक खत्रपाल जी एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी।

वेद-स्वाध्याय

परमात्मा

हिरण्यगर्भं परममनत्युद्यं जना विदुः।
स्कम्भस्तदग्रे प्रासिञ्चद्धिरण्यं लोके अन्तरा।। - अथर्व0 10/7/28
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **स्कम्भः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **जनाः** = लोग **हिरण्य गर्भम्** = हिरण्यगर्भ को **परमम्**=सबसे परली और **अनु-अति-उद्यम्**=जिसका अतिक्रमण कर उससे परे कुछ न कहा जा सके, ऐसी वस्तु **विदुः** = समझते हैं, परन्तु **तत् हिरण्यम्** = उस हिरण्य को, तेजोमय वीर्य को तो **अग्रे** = प्रारम्भ में **लोके अन्तरा** = इस संसार के अन्दर **स्कम्भः** = जगदाधार परमेश्वर ने **प्रासिंचत्** = सिंचन किया है।

विनय - इस विश्व का मूल खोजते हुए हम मनुष्य प्रायः हिरण्यगर्भ तक ही पहुँचते हैं। सब शास्त्रों में इसे जगत् का वह हिरण्यमय (चमकता हुआ) गर्भ माना है जिससे कि इस सब जगत् की उत्पत्ति हुई है। वैज्ञानिक लोग भी इस सौर-मण्डल की उत्पत्ति एक ऐसे ही हिरण्यमय = महातेजः पिण्ड से कहते हैं जिससे कि कालान्तर में पृथक् होकर ठण्डे हुए ये हमारे पृथिवी आदि सब ग्रह आज अपने अवशिष्ट सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं, परन्तु क्या इस हिरण्यगर्भ से भी परम अन्य किसी तत्त्व को नहीं बताया जा सकता? एवं वैयक्तिक जीवन के मूल में भी हम वीर्य (हिरण्य) को, वीर्य के अणु को ही जानते हैं, पर वीर्य के अणु में भी यह जीवन पैदा करने की शक्ति क्योंकर है, यह हम नहीं जानते हैं। सर्वारम्भ में इस वीर्य-अणु को किसने उत्पन्न किया? इस विश्व के प्रारम्भ में तैजस सूक्ष्मलोक में उस हिरण्यगर्भ को किसने प्रकट किया? इसका उत्तर हम नहीं जानते। यह संसार बेशक सत्त्व, रज, तम का (Mind, Motion, Matter) खेल है। तम से परे रज है और रज से परम सत्त्व है, पर क्या सत्त्व (Mind) का अतिक्रमण करके कही जा सकनेवाली, इससे परली और कोई शक्ति संसार में नहीं है? वह सत्त्व का हिरण्य भी जिसके आधार से चमकता है, हे मनुष्यो ! उस 'स्कम्भ' देव को तुम जानो। प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ में जो हिरण्यगर्भ को भी प्रादुर्भूत करता है और जो संसार की जीवन-प्रक्रिया को चालू कर देता है उस स्कम्भदेव को तुम जानो। इस ब्रह्माण्ड-शरीर की नस-नस में जो दिव्य वीर्य (हिरण्य) इसे जीवन देता हुआ सदा बह रहा है, वह उस स्कम्भ का ही सींचा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड में जो भी कुछ जीवन देता हुआ सदा बह रहा है, वह उस स्कम्भ का ही सींचा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड में जो भी कुछ जीवन, चैतन्य, प्राण, दिव्यत्व, प्रकाश, चमक आदि दीख रहा है यह सब हिरण्य उसी स्कम्भ से आया हुआ है, अतः हे मनुष्यो ! तुम उस जगदाधार स्कम्भ को ही परम और अनत्युद्य वस्तु समझो; अन्य किसी को नहीं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

लिंचिंग की इन घटनाओं पर खामोशी क्यों?

हर शब्द की एक ध्वनि होती है, एक गूंज होती है। कई बार वो गूंज सिर्फ देश ही नहीं विदेशों तक गूंजती है। देश में इस समय मॉब लिंचिंग शब्द की गूंज न्यूज स्टूडियो लेकर संसद तक सुना जा सकती है। शायद इस गूंज को सुनकर ही अमरीकी विदेश मंत्रालय ने विश्व भर में धार्मिक आजादी के बारे में अपनी जो वार्षिक रिपोर्ट जारी की है उसमें भारत में मुसलमानों के खिलाफ लिंचिंग की घटनाओं को उठाया है। इसके बाद एक फिर दिल्ली के जन्तर मंतर पर कुछ कथित धर्मनिरपेक्षवादियों द्वारा लिंचिग को लेकर धरना प्रदर्शन किया जा रहा है।

आखिर ये मॉब लिंचिंग क्या है और क्यों पिछले तीन सालों से ही भारत की राजनीति में इसका जिक्र हुआ? असल में लिंचिंग शब्द सन् 1780 में गढ़ा गया था। लिंचिंग शब्द कैप्टन विलियम लिंच के जीवन के साथ जुड़ा है। कहा जाता है विलियम लिंच का जन्म 1742 में अमेरिका के वर्जिनिया में हुआ था। विलियम लिंच ने एक अदालत बना रखी थी और उसका वह स्वघोषित जज था। किसी भी आरोपी का पक्ष सुने बगैर व किसी भी न्यायिक प्रक्रिया का पालन किए बिना आरोपी को सरेआम मौत की सजा दे दी जाती थी। उस समय लिंचिंग इसी अमेरिका तक सीमित था। इसके बाद ये कुप्रथा बाहर भी फैली और आज भारत में लिंचिंग शब्द का प्रयोग एक राजनीतिक हथियार के रूप में किया जा रहा है।

सिर्फ राजनेता ही नहीं मीडिया भी इस शब्द का जमकर फायदा उठा रहा है और भारत को बदनाम करने में कोई कोर कसर बाकि नहीं छोड़ रहा है। 22 अप्रैल 2019 को बीबीसी हिंदी एक खबर प्रकाशित करता है और उस खबर में लिखता है कि भारत में मॉब लिंचिंग का पहला शिकार आस्ट्रलियाई मिशनरी ग्राहम स्टेंस थे। राणा अय्यूब और बरखा दत्त भी वाशिंगटन पोस्ट में मॉब लिंचिंग की घटनाओं को उठाकर हिन्दुओं को निशाने पर लेती है। लेकिन ये भूल गये की 1927 में सीता माता को लेकर गंदे अपशब्दों से भरे पर्चे लाहौर की गलियों में बांटे गये थे। जब इसके जवाब में आर्य समाज ने भी एक छोटी सी किताब रंगीला रसूल छपवाई तो किताब को छापने वाले राजपाल के सीने में इल्मुद्दीन और उसके साथियों ने खंजर भोककर रसूल की बेअदबी का बदला बताया था। क्या ये पहली लिंचिंग नहीं थी?

लेकिन वामपंथी मीडिया अपने आईने में घटनाएँ देखती है जिस अन्य पत्रकार के पास अपना आइना नहीं होता वह भी इनसे आइना उधार ले लेता है। जबकि यदि भीड़ द्वारा घटनाओं को अंजाम दिया गया तो सिर्फ उसे धार्मिक आईने में ही क्यों देखा जाये! तथ्यों के आधार पर बात क्यों नहीं की जाती? 23 अगस्त, 2008 ओडिशा के कंधमाल में वनवासी समाज की सेवा में लगे स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती महाराज की चर्च प्रेरित नक्सली तत्वों ने जन्माष्टमी के दिन जलेशपेटा आश्रम में पीट पीटकर करके हत्या कर दी थी। दिसम्बर 2014 में बिहार के मधेपुरा जिले में अजय यादव की दोनों आंखें तेजाब डाल कर फोड़ दी गयीं, उस पर आरोप था कि उसके किसी से अवैध संबंध थे। इस वजह से भीड़ ने उसकी आंखों में तेजाब डाल दिया था।

इससे तीन साल पहले सुपौल जिले के हंसा गांव के रंजीत दास नाम के एक युवक की आंखें भी तेजाब डालकर फोड़ दी गई थीं। यह काम उसी के गांव के एक दबंग ने कराया था। 11 सितंबर 2007 को बिहार के नवादा जिले के तीन युवकों को भीड़ ने एक साथ तेजाब डाल कर अंधा कर दिया था उन पर मोटर साईकिल छीनने का आरोप था। 2016 के जुलाई महीने में लखीसराय की आठ साल की एक मासूम बच्ची

.....क्या लिंचिंग सिर्फ वही घटना होती है जिनमें मृतक या पीड़ित मजहब विशेष का हो? जब कश्मीर में मजहबी भीड़ सेना के जवानों को पत्थरों से निशाना बनाती है तब लिंचिंग नहीं होती? एक कश्मीरी मुस्लिम डीएसपी को मजहब विशेष की भीड़ पीट-पीटकर मार देती है उसे यह लोग लिंचिग नहीं मानते। दिल्ली के विकासपुरी में डॉ. नारंग और बसई दारापुर में ध्रुव त्यागी और रघुवीर नगर में अंकित सक्सेना को मजहबी उन्मादियों की भीड़ लाठी डंडों चाकुओं से गोदकर हत्या कर देती है तब इसे लिंचिंग नहीं कहा जाता तब इन्हें मनचले और भटके हुए लोग बताया जाता है।.....

की एक आंख इसलिए फोड़ दी गई, क्योंकि उसने किसी के खेत से मटर के चंद दाने तोड़ लिए थे। लेकिन इन घटनाओं में कोई भी पीड़ित या मृतक मजहब विशेष का नहीं था, इस कारण वामपंथियों के आईने में इन्हें लिंचिग नहीं माना गया।

क्या लिंचिंग सिर्फ वही घटना होती है जिनमें मृतक या पीड़ित मजहब विशेष का हो? जब कश्मीर में मजहबी भीड़ सेना के जवानों को पत्थरों से निशाना बनाती हैं तब लिंचिंग नहीं होती? एक कश्मीरी मुस्लिम डीएसपी को मजहब विशेष की भीड़ पीट-पीटकर मार देती है उसे यह लोग लिंचिग नहीं मानते। दिल्ली के विकासपुरी में डॉ. नारंग और बसई दारापुर में ध्रुव त्यागी और रघुवीर नगर में अंकित सक्सेना को मजहबी उन्मादियों की भीड़ ने लाठी, डंडों चाकुओं से गोदकर हत्या कर देती है तब इसे लिंचिंग नहीं कहा जाता तब इन्हें मनचले और भटके हुए लोग बताया जाता है।

कुछ दिन पहले झारखण्ड में तरबेज की हत्या को तमाम मीडिया ने लिंचिंग का बही-खाता निकालकर इसे भी जोड़ दिया। लेकिन इससे पहले की कुछ और घटना इन्हें याद दिलाने की जरूरत है। जुलाई, 2018 महाराष्ट्र के धुले जिले में बच्चा चोरी करने वाले गिरोह का सदस्य होने के संदेह में भीड़ ने पांच लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। फरवरी, 2018 केरल के पलक्कड़ जिले में अनुसूचित जनजाति के 27 वर्षीय मधु की के. हुसैन एवं पी.पी. अब्दुल करीम ने पीट-पीटकर हत्या कर दी। मधु पर खाने का सामान चुराने का आरोप था।

लेकिन इसके विपरीत लिंचिग वही मानी जाती है जिसमें गाय का नाम हो, यदि गाय के नाम पर होने वाली घटनाओं को ही लिंचिग से जोड़ा जाता है तो याद करिये 1857 का संग्राम, कारतूसों में गाय की चर्बी लगाने के कारण भड़का था। यदि यह लोग उस समय भी होते तो इसे स्वतंत्रता संग्राम के बजाय लिंचिग बता देते और मंगल पांडे मॉब लिंचिंग करने वाला पहला व्यक्ति? आखिर यह लोग करना क्या चाहते हैं? इनका एजेंडा सभी को समझने की जरूरत है।

- सम्पादक

राजनेताओं द्वारा हिन्दुओं को परोसे जा रहे झूठ

वर्तमान समय में पूरी दुनिया आतंक से दु:खी है। वैसे तो साधारणतया यही कहा जाता है कि आतंक का कोई धर्म मजहब नहीं है। किन्तु इस पर अगर विचार किया जाए तो उनका कहने का मतलब है कि आतंकवादियों का कोई मजहब नहीं है, वे केवल आतंकवादी हैं और उनका मजहब केवल आतंक है। यह नारा पूरी तरह झूठा है और हिन्दुओं को धोखे में रखने का षड़यन्त्र है। सारी दुनिया में जितनी भी आतंक की घटनाएं हो रही हैं उनमें 99% घटनाएं मुसलमानों द्वारा की जा रही हैं। शेष 1% घटनाएं उन 99% घटनाओं के प्रतिकार के रूप में हो सकती हैं। आतंक की हर घटना के समय, पहले या पीछे, आतंकी स्वयं ही अपना मुसलमान होने का परिचय देता है और उस घटना के पीछे अपना उद्देश्य भी बताता है। वह बताता है कि यह अल्लाह का हुक्म है जिसका वह पालन कर रहा है और कि मरने पर वह बहिश्त में जाएगा जहां उसे भोगने के लिए 72 हूरें (बहुत खूबसूरत नौजवान लड़कियां) तथा और सभी सुख सुविधाओं का सामान मिलेगा। आतंक की हर घटना के बाद कोई न कोई मुस्लिम आतंकी संगठन बड़े गर्व से उसकी जिम्मेदारी भी लेता है। जब कोई आतंकी मारा जाता है हजारों मुसलमान उसके जनाजे में भाग लेते हैं। ये बातें चीख- चीख कर बता रही हैं कि आतंकी मुसलमान ही हैं।

मुसलमानों की पवित्रतम पुस्तक कुरान उन्हें समझाती है कि काफिरों (गैर-मुस्लिमों) का कत्ल करना उनके लिए सबसे अधिक पवित्र काम है और कि सारी दुनिया में इस्लामी राज स्थापित करना उनका उद्देश्य है। पिछले 1400 साल का इस्लाम का इतिहास यही सिद्ध कर रहा है। मुसलमानों का पैगम्बर मुहम्मद जिन्दगीभर आतंक का खेल ही तो खेलता रहा है। मुसलमान और भी खुश होते हैं जब कत्ल किए जाने वाले लोग ही 'आतंक का कोई मजहब नहीं' बोलकर कातिलों का बचाव भी करते हैं। इतिहास बताता है कि भारत में मुसलमान आक्रमणकारियों और शासकों ने जब भी हिन्दुओं को कत्ल किया या उनके मन्दिर-मूर्तियां तोड़ीं, उन्होंने बड़े गर्व के साथ उसका वर्णन किया - यह दर्शाने के लिए कि उन्होंने अल्लाह का बहुत बड़ा और पवित्र काम किया है। फिर भी कहना कि आतंक का कोई मजहब नहीं है - क्या यह वाक्य हमारे राजनेताओं की कायरता और मानसिक दिवालिएपन का परिचायक नहीं है?

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना - बड़ा झूम-झूम कर गाया जाता है यह तराना जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल उलट है। मुसलमानों की मजहबी पुस्तक कुरान में 6000 से अधिक आयतें हैं। उनमें एक तिहायी आयतें ऐसी हैं जो गैर-मुस्लिमों के प्रति नफरत पैदा करती हैं, उन पर अत्याचार करने का और उन्हें मुसलमान बनाने का या जान से मार देने का आदेश देती हैं। सभी मुसलमानों के लिए कुरान के प्रत्येक शब्द को बिना शक किए सत्य मानना तथा स्वीकार करना अनिवार्य है। इसलिए मुसलमान आंतक की जो भी घटना करते हैं वे कुरान के आदेश से ही करते हैं। इस्लाम में भाईचारा सिर्फ मजहब का है। मुसलमान दुनिया में कहीं भी रहते हैं वे आपस में भाई-भाई हैं और गैर-मुस्लिम उनके शत्रु हैं - कुरान का यही फरमान है। कुरान की कुछ आयतें-

9.5 - मूर्तिपूजक जहां भी मिलें उन्हें कत्ल करो।

4:101 - गैर-मुस्लिम निश्चित तौर पर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

8:12 - गैर-मुस्लिमों की गर्दनों पर और उनकी सब उंगलियों पर प्रहार करो।

सर्वधर्म सम्भाव - इस वाक्यांश का अर्थ है कि सभी धर्मों के प्रति एक जैसी भावना रखो। पहली बात तो यह है कि ये सभी धर्म नहीं हैं, अपितु मजहब या पंथ हैं। सभी मजहबों के अलग-अलग अपने अपने आदर्श पुरुष हैं। उनके मजहबी ग्रन्थ अलग-अलग हैं, उनकी मान्यताएं अलग-अलग हैं। उनमें बहुतों के खानपान, पहरावा, रीति-रिवाज भी अलग-अलग हैं। भारत पर आक्रमण करने वाले महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, बाबर आदि मुसलमानों के आदर्श पुरुष हैं, जबकि वे हिन्दुओं के हत्यारे थे। गाय को 'हलाल' के नाम पर तड़पा-तड़पा कर मारना, फिर उसका मांस खाना मुसलमान अपना अधिकार मानते हैं जबकि हिन्दू गाय को पैर से छूना भी पाप मानते हैं। मुसलमानों की मजहबी पुस्तक कुरान गैर-मुस्लिमों पर जुल्म करने का आदेश देती है। हिन्दू 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात सारे संसार को अपना परिवार मानता है। क्या कोई नेता बता सकता है कि ऐसी स्थिति में 'सर्वधर्म समभाव' का झूठ क्यों फैलाया जा रहा है। और भी, इस पाखण्ड को केवल हिन्दू ही अपनाए हुए हैं और कोई मजहब वाला नहीं।

..... आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, अद्वितीय सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र की एकता के लिए 'सबका एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य' का होना परम आवश्यक बताया है। आर्य समाज के नियम बनाते हुए उन्होंने दसवां नियम दिया - 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'.....

गंगा-यमुनी सभ्यता -यह वाक्य मुसलमानों को बहुत प्रिय है। वे कहते हैं कि भारत में केवल हिन्दुओं की ही नहीं, अपितु हिन्दू और इस्लाम की रली-मिली सभ्यता है। मुसलमान आठवीं सदी से आक्रमणकारी के रूप में ही भारत आए। उन्होंने एक हजार वर्ष तक भारत के मूल निवासी हिन्दुओं का करोड़ों की संख्या में कत्लेआम किया, मौत का डर दिखाकर उन्हें मुसलमान बनाया, उन्हें गुलाम बनाकर गजनी आदि स्थानों पर ले जाकर बेचा, उनसे गन्दे से गन्दे काम करवाए, स्त्रियों से बलात्कार किए, बीसों हजार मन्दिर-मूर्तियां तोड़ीं और उनसे अथाह धन सम्पति लूटी, भारत को काटकर अलग - पाकिस्तान और बंग्लादेश - दो इस्लामी देश बना लिये। जबकि हिन्दू जब से यह पृथ्वी बनी है अर्थात लगभग दो अरब वर्ष से यहां रह रहे हैं और उनकी सभ्यता भी उतनी ही पुरानी है। फिर भी मुसलमान शेष बचे भारत पर अपना अधिकार जताने के लिए गंगा-यमुनी सभ्यता का राग अलापते हैं। हिन्दुओं को इस झांसे में नहीं आना चाहिए। भारत की सभ्यता शुद्ध वैदिक सभ्यता ही है, रली-मिली नहीं।

अनेकता में एकता - भाषा के आधार पर अलग-अलग प्रान्त, मजहब के आधार पर अलग-अलग कानून, जातपात के आधार पर अलग-अलग सुविधाएं, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक के नाम पर जनता का बटवारा - ये अलग-अलग व्यवस्थाएं देश को जोड़ नहीं रहीं, अपितु, तोड़ रही हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बारम्बार बड़े जोर-शोर से कहते हैं कि 'अनेकता में एकता' हमारी बड़ी ताकत है। क्या आप बताएंगे कि मुसलमानों का सब देश वासियों के लिए एक से कानून (Uniform Civil Code) न बनने देना देश की बड़ी ताकत है। देशहित में जनसंख्या नियन्त्रण कानून बनना चाहिए। परन्तु मुस्लिम नेता इस बात से सहमत नहीं हैं, इसलिए हमारे राजनेता इस विषय को नहीं उठाते, क्या यह भी देश की बड़ी ताकत है? अयोध्या में राम मन्दिर पर हिन्दुओं और मुसलमानों में गतिरोध भी क्या देश की बड़ी ताकत है? जातपात के आधार पर आरक्षण - जिसके कारण योग्यता को नकार दिया गया है और अयोग्यता को बढ़ावा दिया गया है, क्या यह देशहित में है और देश की बड़ी ताकत है? नहीं, ये हमारी ताकत नहीं, अपितु कमजोरियां हैं।

व्यक्तिगत विषयों में स्वतन्तत्रा और अनेकता रहती है, परन्तु सार्वजनिक और राष्ट्रीय विषयों में एकता का होना परम आवश्यक है जैसे सड़क पर बाईं ओर वाहन चलाने का कानून सबके लिए एक सा है। यही राष्ट्र की ताकत है। अनेकता में एकता नहीं, अपितु एकता में ही एकता है, अनेकता में तो विघटन ही है।

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, अद्वितीय सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र की एकता के लिए 'सबका एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य' का होना परम आवश्यक बताया है। आर्य समाज के नियम बनाते हुए उन्होंने दसवां नियम दिया - 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'

गांधीवाद - गांधी ने हिन्दुओं का तथा देश का जितना अहित किया है उतना शायद ही और किसी ने किया हो। उनकी झूठी अहिंसा तथा कपटपूर्ण सत्य देश के लिए तथा हिन्दुओं के लिए बहुत घातक रहे हैं। गान्धी ने अपने आपको मुसलमानों के आगे पूरी तरह समर्पित कर रखा था। वे मुसलमानों की हर अनुचित मांग के आगे सिर झुकाते थे तथा हिन्दुओं पर दबाव बनाते थे कि वे भी वैसा ही करें। अपनी प्रार्थना सभाओं में वे हिन्दुओं को आदेश देते थे कि मुसलमान उन पर राज करें या उन्हें जान से मार दें तो भी वे उनका विरोध न करें। मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर होते अत्याचारों को देखकर भी वे अनदेखा करते थे, चुप रहते थे, उन्हें छिपाने की कोशिश करते थे या फिर उन हत्यारे मुसलमानों का ही पक्ष लेते थे। दिसम्बर 1926 में स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को गांधी ने अपना 'भाई' कहा था और उसे 'निर्दोष' बताया था, परन्तु भारत की अंग्रेज सरकार ने 1927 में उसे फांसी दे दी।

भारत विभाजन के समय कई लाख निर्दोष लोगों का कत्ल हुआ जिनमें अधिकतर हिन्दू थे। उसके लिए पूरी तरह गांधी की जिद्द 'जो जहां रहता है वहीं रहे' ही जिम्मेदार है। गांधी ने कहा था 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा'। पाकिस्तान तो बना पर इस पर उनकी लाश नहीं बिछी। गांधी ने स्वतन्त्र भारत के नेताओं को राष्ट्र-घातक सलाह दी थी कि देश को सेना की आवश्यकता नहीं है, अहिंसा ही देश की रक्षा करेगी। चुनाव जीतकर कांग्रेस के अध्यक्ष बने सुभाष चन्द्र बोस को गांधी ने काम नहीं करने दिया, उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा।

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रेरक प्रसंग

मुझे न भावे

यह 1960 ई. से कुछ पहले की बात होगी कि भारत की कांग्रेस सरकार श्री विनोबाभावे की छवि बनाने के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय करती थी। विनोबा जी भी शासन से जनहित की कोई बात भले ही नहीं मनवा सकते थे फिर भी उन्हें सन्तोष था कि सरकार उन्हें सन्त मानती थी। यह भी सत्य है कि जनता का एक बड़ा भाग भी उन्हें 'सरकारी सन्त' मानता था।

उन्हीं दिनों किसी पत्रकार ने पं. श्री रामचन्द्रजी देहलवी से पूछ लिया कि 'विनोबाभावे के बारे में आपका क्या विचार है?' पण्डितजी ने झट से उत्तर दिया, 'विनोबाभावे सबको भावे, मुझे न भावे।''

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर अम्बाला में सम्पन्न

17 प्रान्तों के 300 आर्यवीरों ने शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक एवं शिक्षक श्रेणी का लिया प्रशिक्षण

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर का आयोजन शिवालिक गुरुकुल अलियासपुर अंबाला में 2 से 16 जून 2019 तक किया गया। शिविर का उद्घाटन शिवालिक गुरुकुल के उपाध्यक्ष श्री विक्रम सिंह ने ध्वजारोहण के साथ किया। इस राष्ट्रीय शिविर में 17 प्रांतों के लगभग 300 आर्यवीरों ने शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक व व्यायाम शिक्षक श्रेणी में सघन प्रशिक्षण प्राप्त कर उपाधियों को ग्रहण किया।

राष्ट्रीय शिविर में सभी प्रकार का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के सानिध्य में किया गया। पूज्य स्वामी जी ने आर्यवीरों को शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक उन्नति के विभिन्न उपायों का सफल प्रशिक्षण प्रदान किया एवं आत्मरक्षा के उपाय भी सिखाए। शिविरार्थियों को विशेष रूप से प्राथमिक चिकित्सा व सहायता के उपायों का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस शिविर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य पूरे शिविर काल में उपस्थित रहे। शिविर की भोजन, आवास आदि की संपूर्ण व्यवस्था शिवालिक गुरुकुल अलियासपुर, अंबाला के माननीय अध्यक्ष श्री रविंद्र सिंह द्वारा की गई। शिविर में आए हुए आर्यवीरों को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ साथ बौद्धिक जिसमें आर्य समाज क्या है ? ईश्वर कैसा है, कहां रहता है? आत्मा क्या है? आत्मा का स्वरूप क्या है? वर्तमान की परिस्थितियों से किस प्रकार से निपटा जा सकता है। आर्य वीर दल की गतिविधियों को बढ़ावा देकर समाज को सही नेतृत्व किस प्रकार से दिया जा सकता है आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उद्देश्य संस्कृति रक्षा, शक्ति संचय व सेवा कार्य के द्वारा आर्यवीरों को आत्मिक, सामाजिक व शारीरिक उन्नति के साथ किस प्रकार से प्रयोग करना है सब विधिवत सिखलाया गया। इस शिविर का सफल संयोजन शिवालिक गुरुकुल के निदेशक आचार्य नंदकिशोर जी द्वारा किया गया। शिविर की आंतरिक व्यवस्था सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान शिक्षक श्री प्रवीण आर्य द्वारा की गई एवं प्रबंधन व्यवस्था श्री समरसिंह जी के द्वारा संपन्न हुई। शिविर में राजस्थान के प्रांतीय संचालक श्री भूदेव शास्त्री जी के द्वारा बौद्धिक प्रदान किया गया। साथ ही दिल्ली आर्य वीर दल के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी, श्री अमित जी ने आर्य समाज (महाशय धर्मपाल मीडिया सेंटर) द्वारा संचालित यूट्यूब पर द आर्य समाज, रंग दे बसंती चैनल की उपयोगिता के विषय में जानकारी दी तथा किस प्रकार सूझ-बूझ से हमें वर्तमान समय में मीडिया का उपयोग करना चाहिए, इससे अवगत कराया। शिविर के दौरान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य समाज के मीडिया सेंटर द्वारा विशेष शुटिंग की गई। जिसमें शिविर की पूर्ण दिनचर्या को रिकॉर्ड किया गया।

श्री संतराम शास्त्री, श्री दिनेश आर्य, भागचंद, श्री जितेन्द्र, श्री कौशल, श्री गोवर्धन, श्री कृपाल, श्री ज्ञानेश आदि व्यायाम शिक्षकों के द्वारा लाठी, तलवार, भाला, फरसा सूर्य नमस्कार, चंद्र नमस्कार, भूमि नमस्कार, सर्वांग सुंदर व्यायाम, आसन, प्राणायाम, नियुद्ध आदि का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के दौरान 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी आर्य वीरों ने वृक्षा रोपण किया। 12 जून को सभी आर्य वीरों का आचार्य नंदकिशोर जी के निर्देशन में यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुआ।

शिविर का विशेष आकर्षण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से आर्यवीरों को यज्ञ का प्रशिक्षण देना रहा। श्री विनय आर्य जी ने आर्य वीरों को विशेष उद्बोधन दिया, जिसमें विचार की शक्ति का उपयोग कैसे करें, उसकी विशेषताएं क्या हैं? इस उपयोगी विषय पर विनय जी ने विस्तार से प्रकाश डालकर शिविरार्थियों लाभान्वित किया। शिविर समापन से 1 दिन पूर्व 15 जून 2019 को सार्वदेशिक आर्य वीर दल की साधारण विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रांतीय संचालक, मंत्री, प्रधान व्यायाम शिक्षक व अन्य प्रांतीय पदाधिकारी गणों के साथ व्यायाम शिक्षकों की उपस्थिति रही। सार्वदेशिक आर्यवीर दल की विचार गोष्ठी का संचालन श्री सत्यवीर आर्य, (प्रधान संचालक, सा.आर्य वीर दल) श्री वेद प्रकाश आर्य (महामंत्री, सा.आर्य वीर दल) के द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्षता स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने की, मुख्य आमंत्रित श्री विनय आर्य जी(महामंत्री, दिल्ली सभा) भी उपस्थित रहे, साथ ही आचार्य धनंजय श्री (उत्तराखंड), आचार्य उदयन जी (पंजाब), श्री बृहस्पति आर्य (दिल्ली), श्री पंकज जी (उत्तरप्रदेश) आचार्य ऋषिपाल (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ) श्री अर्जुन आर्य, श्री कृष्णपाल जी आदि विभिन्न प्रांतों के अधिकारी, शिक्षक, कार्यकर्ता उपस्थिति रहे। आर्य वीर दल की गतिविधियों को आगे बढ़ाने पर विचार मंथन के साथ इस गोष्ठी का समापन हुआ।

'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' योजना के अन्तर्गत आर्य वीर एवं वीरांगना दल के सभी शिविरों में शिविरार्थियों को दिया जाएगा यज्ञ प्रशिक्षण।

15 जून 2019 को सायंकाल 6:00 बजे से आर्यवीरों का भव्य व्यायाम प्रदर्शन प्रदर्शित किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री सुरेश कौशिक (राज्य चौकसी ब्यूरो अंबाला) ने की। आए हुए अतिथियों का स्वागत श्री नायब सिंह ने किया। इस अवसर पर आर्यवीरों ने विभिन्न भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य समाज यमुनानगर, आर्य समाज जगाधरी, आर्य समाज अंबाला, आर्य समाज बराड़ा, आर्य समाज मंधार, आर्य समाज बूबका आदि के आर्य जन उपस्थित रहे।

- वेद प्रकाश आर्य,कार्यकारी महामन्त्री

MDH
हवन सामग्री
5,10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
मूल्य : मात्र 90/- किलो
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

22 से 23 जून 2019 को आर्यसमाज माण्डले के प्रांगण में विनय आर्य जी के सान्निध्य में विशेष शंका समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम के विषय – ईश्वर कौन है, कहां रहता है, क्या करता है? पुर्नजन्म और कर्मफल सिद्धांत आदि सुनिश्चित किए गए थे। जिसमें भारी संख्या में वहां के युवक-युवतियों ने भाग लिया और इस रचनात्मक कार्यक्रम के प्रमुख विषयों को लेकर प्रश्न किए, विनय जी ने अपनी सरल सहज शैली में वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं के अनुसार उत्तर दिए। जिससे वहां उपस्थित खासकर युवावर्ग लाभान्वित हुआ और उन्हें आर्य समाज की विचारधारा बहुत अच्छी लगी।

24 जून को आर्य समाज जियावाडी में वहां के दर्जन भर आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण उपस्थित थे, इस अवसर पर एक विशेष संगोष्ठि का आयोजन किया गया जिसमें वहां के लगभग सभी आर्यजनों ने बारी-बारी से आर्य समाज की गतिविधियों को लेकर अपने अपने विचार प्रस्तुत किए और बाद में विनय जी ने भी आर्य समाज को लेकर उपस्थित आर्यजनों को अपने उदबोधन में कहा कि महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने के लिए हमें अपने अपने स्तर पर आर्य समाज के प्रचार प्रसार और विस्तार के लिए पूरी शक्ति से कार्य करना होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के अधिकारियों और समस्त आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, कार्यकर्ता और सदस्यों की सक्रियता यहां पर प्रशंसनीय है, आप सभी महर्षि दयानंद और आर्यसमाज के प्रति समर्पित हैं, अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन 2018 में भी आपकी सहभगिता अत्यंत प्रशंसनीय रही है, सम्मेलन की सपफलता के लिए भी आप सभी को हार्दिक बधाई। आपकी सेवा निष्ठा को देखते हुए यह कहना कोई अतिश्याक्ति नहीं होगी कि म्यांमार में आर्य समाज दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है और आगे भी करेगा, एक दिन यह भूमि आर्य समाज के एक विश्व स्तरीय केंद्र के रूप में सक्रिय भूमिका निभाएगी। इसी दिन आर्य समाज जियावाडी के निकट गुरुकुल की भूमि का भी वहां के अधिकारियों के साथ विनय आर्य जी ने निरीक्षण किया और इस अनुपम कार्य के लिए सबकी प्रशंसा की। इसी क्रम में 24 जून को ही आर्यसमाज जयपुर में श्री विनय आर्य जी ने वहां के अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सदस्यों से भेंट की। आर्यसमाज जयपुर के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में सहभागिता के लिए धन्यवाद दिया तथा म्यांमार में आर्यसमाज के विस्तार हेतु उनका उत्साहवर्धन किया।

इसी क्रम में वहां आर्यसमाज शिवपुर में एक नए भवन का उद्घाटन कार्यक्रम सुनिश्चित था। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में श्री विनय आर्य जी ने भाग लिया और ध्वजारोहण कर (ओम् का झंडा ऊंचा रहे) के जयघोष लगवाए। इसके साथ-साथ वहां पर भजन एवं प्रवचनों का विशेष आयोजन किया गया था। जिसमें श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्यसमाज एक विश्वव्यापी संगठन है। जिसमें म्यांमार (बर्मा) का अपना स्थान है। हमें अपने पूर्वजों से सेवा, संस्कृति को अपनाना चाहिए और नित-निरंतर आर्य समाज के उत्थान के लिए सोचना, विचारना और कर्म करना चाहिए। इस अवसर पर वहां आर्ष साहित्य भी वितरित किया गया। 25 जून को ही आर्यसमाज तठेगौं के नवनिर्माण कार्य का भी विनय आर्य जी ने अवलोकन किया और उसके सफल, सुंदर निर्माण के लिए वहां के अधिकारियों एवं आर्यजनों को शुभकामनाएं दी। इस क्रम में आर्य स्त्री समाज यंगून में वहां के सम्मानित अधिकारियों ने विनय आर्य जी को शंका समाधान कार्यक्रम हेतु विशेष रूप से आमन्त्रित किया और वहां पहुंचने पर उनका अभिनंदन स्वागत किया गया। श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित युवक-युवतियों एवं आर्यजनों की शंकाओं का समाधान अपनी चिर-परिचित भाषा भावशैली में किया, जिससे वहां उपस्थित सभी आर्यजन गौरवान्वित हुए और आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य को लेकर आशान्वित हुए तथा सभी प्रेम-सौहार्द के वातावरण में एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे। इसी के साथ विनय जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के अधिकारियों एवं आर्यजनों का आभार व्यक्त किया और अपने इस प्रेरणाप्रद यात्रा को समाप्त करते हुए वहां से विदाई ली।

आर्यसमाज शिवपुर के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते म्यांमार सभा के प्रधान एवं मचस्थ सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य

आर्यसमाज मांडले में आर्यजनों की शंकाओं का समाधान करते श्री विनय आर्य जी

आर्यसमाज यगून का भवन एवं इस अवसर पर प्रवचन, शका समाधान एवं महिला आर्यसमाज की अधिकारियों को सम्मानित करते सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी

आर्यसमाज तठेगौं का पुराना भवन एवं निर्माणाधीन नवीन भवन का अवलोकन करते सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, साथ में हैं म्यांमार सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी एवं आर्यसमाज तठेगौं के अधिकारीगण।

War and Peace in VEDAS

- Brigadier Chitranjan Sawant

Waging war has been a favourite pastime of kings and captains from time immemorial. Delving deep into the art of statecraft one finds that waging a war has been an extension of pursuing POLICIES of national interests and taking them to the logical end. What is not achievable through diplomacy is sought to be achieved through wars. All political philosophers have a common meeting ground when they say that war is an evil, albeit a necessary evil. Indeed a state professing to pursue a policy of Peace says that it had to declare war to promote peace. Thus the ultimate goal of the civilized world is peace and it cannot but be achieved by waging a war against enemies of a civilized way of life and perpetrators of terror.

Mahabharat, the mother of all wars waged on the soil of India that is Bharat, was fought as a Dharmayudh, that is as per the righteous code of conduct in war and its sole aim was to establish a state of Dharma , where Peace would prevail after eliminating Adharma or the Evil.

It is a fact recorded in history that Yogeshwar Shri Krishna, who gave us Bhagwad Gita, went as an ambassador of the Pandavas to the Kaurava court to plead for peace.

He was prepared to surrender many rights but the evil forces were adamant on perpetrating injustice and immorality.

The Yogeshwar had no choice but to advise the Pandavas to wage a war now to promote peace eventually. The rest is history. Let us now go back to the time of human creation on our planet and revelation by Ishwar of the divine knowledge, VEDAS, and learn more about war and peace therein.

Peace is indeed the avowed goal of the man who walks on the Vedic path. Waging a war for the sake of waging a war goes against the grain of the Vedic Thought. As a matter of fact an aimless act of commission or omission is frowned upon. A man, that includes a woman too, who entertains sublime ideas and has charity for all and malice for none in his heart, acts as per the tenets of the Vedas is indeed an Arya (that is a noble man). One who is fond of bloodshed and goes against the injunctions of the Vedas is called a Dasyu(a demonlike creature). A war is not of the making of an Arya. However, when the life and limb as well as the Dharma are at stake,

an Arya has little choice but to wage a war with all might and resources at his command. An Arya goes into battle with a strong will to win. Let us have a look at some of the Ved mantras on war and peace.

LEADERSHIP IN WAR

Ye Murdhanah Kshitinam Adabdhasah Swa-Yashasah Vrata Rakshante Aduhah , so goes the thirteenth mantra of 67th sukta in the 8th mandala of the Rigveda. A great leader of human beings, both in war and peace, is one who takes a vow to do a good turn to one and all and lives and dies by it. For such a leader the motto is: Society before Self. A leader in battle is convinced of the cause he is fighting for and convinces the army that he leads. This indeed is a great morale- raising factor. It is a well known principle that Moral (that includes morale) is to physical as ten to one. The Rigveda enjoins on such a leader to be Indomitable and Irrepressible, that is one who goes through thick and thin and remains unfazed. He takes the joys and sorrows of life in the normal stride of life. He is not cowed down by adversities and is never overwhelmed by the enemy forces, notwithstanding their numerical or fire –power superiority. Further, a leader in battle does not rest on his or his ancestors' laurels but earns a niche for himself through sane and timely actions. Of course, a leader cannot afford to be a rebel against the time-honoured tenets lest the soldiers under his command catch this infection and rebel against the commanding General. Such rebellious acts lead to acute indiscipline leading to frugging and fratricide. That will sound the death knell of both, the leader and the led. The perennial source of strength is the Character of the leader. Character is a cumulative outcome of fulfilling vows taken in the larger interests of the king and country. In the present context king stands for the sovereign state.

The Rigveda, inter alia, eulogizes the role of a courageous warrior. What kind of a warrior draws the admiration of his compatriots? The 5th mantra of the 55th sukta in the 1st mandala of theRigveda provides the answer. He is the one who attacks the enemy with a Vajra and strikes decisively while he himself is calm, cool and collected. A brave soldier fights for Dharma against Adharma and deals a death -blow to the evil enemy. The Vajra is the most potent weapon in the armoury of the Vedic warriors. It finds a mention in contemporary life and literature. Many folklores are woven around it. Of course, the all time popular tale of Indra requesting Rishi Dadheech for his bones to make a Vajra thereof to kill the dreaded demon demonstrates how the rulers and rishies joined hands to fight against evil and help the Good triumph. This also illustrates the concept of a Total War where the entire nation is geared to fight, not the Army alone, against the enemy. Here again it is the undaunted spirit of the warrior in battlefield that keeps the flag of Aryas flying by beating Dasyus in their own game. It is, therefore, an ongoing battle between the forces of good and evil where the former must defeat the latter. In the Dharmyudh, it is the Dharm that comes out with flying colours. Moral of the story is that wars are inevitable and a nation must remain prepared for it always and everytime. History bears witness to the fact that those civilizations that paid scant attention to preparation of rank and file of warriors invariably lost wars and their civilization was wiped out from face of the earth. Prithivya Vya Ashah Parvatanam – O sons of the Brave! Be ever on the move across the globe, in all directions and cross the mighty mountains.

- Continue in Next issue

पृष्ठ 3 का शेष

राजनेताओं द्वारा हिन्दुओं को .....

पन्द्रह प्रदेश कांग्रेस कमेटियों में से बारह ने सरदार पटेल के पक्ष में मत दिया था और नेहरू के पक्ष में एक भी मत न था। फिर भी गांधी ने पटेल को पीछे करके नेहरू को देश पर थोप दिया। निश्चित तौर पर यह लोकतन्त्र की हत्या तथा देश से गद्दारी थी। गांधी ने मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन में हिन्दुओं को घसीटा जिसके परिणाम स्वरूप मालावार (केरल) में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अथाह अत्याचार किए। गांधी महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोबिन्द सिंह जैसे महान देश भक्तों की निन्दा करते थे, उन्हें गलत मार्ग पर चलने वाले बताते थे। वे हिन्दू नेताओं – लाला लजपत राय, पण्डित मदनमोहन मालवीय तथा स्वामी श्रद्धानन्द की बुराई किया करते थे। इस प्रकार गांधी ने हिन्दू कौम को कायर, कमजोर और दब्बू बनाया। फिर भी भारत के राजनेताओं ने गांधी का पल्ला अभी तक पकड़ा हुआ है, उसे राष्ट्रपिता, बापू तथा महात्मा बनाकर देश पर लाद रखा है। इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य और क्या होगा?

नोट–डा. अम्बेडकर तथा वीर सावरकर गांधी को महात्मा नहीं मानते थे।

सत्यमेव जयते – यह मुण्डक उपनिषद का वचन है। पूरा श्लोक तो बड़ा है, परन्तु आधा श्लोक है –

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः। अर्थ – सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। सत्य के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य देवता बनता है।

वाक्य तो बड़ा पवित्र है, परन्तु हमारे राजनेता जो कोई सत्य बोलता है उस पर भूखे भेड़िए की तरह टूट पड़ते हैं कि उसने सत्य क्यों बोल दिया। देश का मीडिया (Media) उसे विवादित बयान कहकर नकार देता है। 'सत्यमेव जयते' – उचित ध्येय वाक्य होने पर भी हमारे राजनेताओं ने इसे झूठा सिद्ध कर दिया है। इसका कारण है कि वे मुसलमानों से डरते हैं, उनकी खुशामद में लगे हैं। उनका पूरा प्रयास है कि जो बात मुसलमानों को प्रिय न हो वह बात देश में कोई भी हिन्दू न बोले, वह बात चाहे कितनी भी सत्य और सही क्यों न हो। यह हमारे राजनेताओं के नैतिक पतन की पराकाष्ठा है। इसी कारण से हिन्दू कौम विनाश के कगार पर पहुँच गई है। अगर हमारे हिन्दू नेता सत्य को स्वीकार करें तथा सत्य को प्रोत्साहन दें तो हिन्दू कौम पुनः सजीव, सशक्त तथा उन्नत हो सकती है।

- **कृष्णचन्द्र गर्ग**
kcg831@yahoo.com

आर्य वीरदल मुंबई का आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वाधान में आर्यवीर दल मुम्बई का 8 दिवसीय आदर्श जीवन निर्माण शिविर आदिवासी विभाग शासकीय माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कन्या आश्रम शाला, शेंणवा, कूल्हे, शहापुर में 12 से 19 मई 2019 तक सम्पन्न हुआ।

शिविरार्थियों को यज्ञ, योग, व्यायाम, प्राणायाम, स्वाध्याय आदि के माध्यम से आठ दिनों तक वैदिक संस्कार प्रदान किए गए। बच्चों को जुड़ों–कराटे, धनुर्विद्या, गन–शूटिंग और नैतिक शिक्षा का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया। बौद्धिक कक्षा के विशेष आयोजन में श्री सौरभ भौमिक, श्री चंद्रन पाठक, श्री संजय शेंडे, श्री दिलीप भाई वेलाणी तथा श्री सुधीर खुल्लर जी का प्रयास सराहनीय है।

शिविर के समापन समारोह में आर्यवीर किशोर ने लोहे का सरिया गले से मोड़कर सबको अचम्भित कर दिया तो वहीं आर्यवीर रितेश ने दांतों से इनोवा गाड़ी को खीचकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। शिविर संचालक श्री नरेंद्र शास्त्री ने श्री पदमाकर वरकुटे जी को धनुर्विद्या का प्रदर्शन करते हुए बाण चलाकर उनके गले में माला पहनाई। इस अवसर पर आर्यसमाज वासी नई मुंबई के प्रधान जिले सिंह चौधरी ने आर्यवीरों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि ऐसे रचनात्मक शिविरों से ही बच्चों को संस्कार मिलते हैं। इस अवसर पर बच्चों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वालों को मैडल प्रदान किया गया। अन्य सभी बच्चों को भी प्रमाण पत्र एवं पुस्तकें दी गई।

शिविर का संचालन आचार्य नरेंद्र शास्त्री, संचालक आर्यवीर दल मुंबई ने कुशलतापूर्वक किया।

– ***धर्मधर आर्य, महामन्त्री***

'एक प्रयास' - विशेष कार्यशाला सम्पन्न

भारतीय व वैदिक संस्कृति को सुरक्षित करने हेतु, आज के वातावरण को जानने, समझने तथा जागरूकता के अभियान को सबल बनाने हेतु, विशेष कार्यशाला 'एक प्रयास' का आयोजन 30 जून 2019 - प्रात: 10.45 बजे से 1.15 बजे तक, आर्यसमाज कीर्तिनगर में किया गया। बहुत सारे सदस्यों व स्थानीय नागरिकों का सहयोग मिला, अपना बहुमूल्य समय निकाल कर आए, जिनमें से प्रमुख सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार, सेवाप्रकल्प महिला मण्डल की सह मंत्रीणि, श्रीमती योगेश सेठी, निगम पार्षद श्री विपिन मलहोत्रा, हैदराबाद तेलगाना से बीजेपी के विधायक श्री टी राजन अपने सहयोगियों सहित, असम बीजेपी की श्रीमती प्रोमिधा साथियों के साथ, आ. श्रद्धा आर्य आदि आदि। अपने भविष्य को सुरक्षित व समृद्धशाली बनाने के लिए, आ.कल्पना आर्य जी व श्री आशीष जी और उनके सहयोगियों द्वारा 'कर्मयोगी जयते एसोसिएशन' के सौजन्य से, पावर प्वॉइंट से तैयार, सत्य तथ्यों एवं आंकड़ों पर आधारित सारगर्भित घटनाक्रम को प्रस्तुत किया। उन्होंने इस्लामिक गतिविधियों व वैदिक संस्कृति का भेद, इस्लाम की बर्बरता पूर्वक फैलाव की दमनकारी नीतियों, आतंकवादी गतिविधियों का सर्मथन तथा पूर्णतया प्रशिक्षण व योजनाबध कार्य पद्धति का विस्तार पूर्वक विवेचन किया। उन्होंने मानचित्र द्वारा समझाया कि कभी हम आर्य ईरान, अफगानिस्तान से लेकर के बर्मा तक के सदूर क्षेत्र तक फैले हुये थे लेकिन इस्लाम की नपाक व दमनकारी फैलाव की नीतियों तथा हमारी असंगठित रहने की कूरीतियों के कारण बहुत ही छोटे क्षेत्र में सिकुड़ते जा रहे हैं। उन्होंने सभी सामानित आए हुये सज्जनों को समझाने का सफल प्रयास किया कि कैसे हम अपना भविष्य व भावी पीढ़ियों को सुरक्षित कर सकते हैं। कार्यक्रम के पश्चात, श्री मनोहर लाल कुमार जी ने, 1947 में व्यक्तिगत व हिन्दुओं के साथ हूं घटनाओं को याद करते हुए, इस जनजागरण के कार्यक्रम को सराहा। श्री राजकुमार आनन्द जी ने इस आयोजन को हर घर के सदस्य तक पहुंचाने तक का आह्वान किया तथा इसके प्रचार हेतु सहयोग भी किया। श्री टी राजन जी ने बताया कि हम लोग भी अपने क्षेत्र में संगठित होकर, ऐसा प्रचार व प्रशिक्षण कार्यक्रम कर रहे हैं। श्रीमती प्रोमिधा जी ने हम भी विपरीत परिस्थितियों में इसी तरह के प्रेरणात्मक कार्यक्रमों को संगठित हो आयोजित कर रहे हैं।

- सतीश चड्ढा

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रोहतास नगर
शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110092
प्रधान : श्री सुखबीर सिंह त्यागी
मन्त्री : श्री विकास कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री सतीश कुमार कश्यप

आर्यसमाज सुन्दर विहार
दिल्ली-110087
प्रधान : श्री कंवरभान खेत्रपाल
मन्त्री : श्री भक्तनाथ बतरा
कोषाध्यक्ष : श्री संजीव आर्य

आर्यसमाज राजनगर-2
पालम कालोनी, नई दिल्ली-110045
प्रधान : श्री भगत सिंह राठी
मन्त्री : श्री रतन आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री कृष्ण अग्निहोत्री

आर्यसमाज गोविन्दपुरी
कालकाजी, नई दिल्ली-110019
प्रधान : श्री सोमदेव मल्होत्रा
मन्त्री : श्री सुरेशचन्द्र गुता
कोषाध्यक्ष : श्री सत्येन्द्र मिश्रा

आर्यसमाज नरेला
दिल्ली-110040
प्रधान : श्री लाला हेमराज बंसल
मन्त्री : श्री प्रदीप आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री धर्मवीर आर्य

वधू चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि 12/01/1992, कद - 5 फुट 5 इंच, शिक्षा - B.Tech. (Com. Sc.) NIT Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क करें-

9412865775, 9412135060

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका के तत्वाधान में आर्य समाज पश्चिम विहार नई दिल्ली में 14 जुलाई 2019 को सांय: साढ़े तीन बजे से साढ़े सात बजे तक राष्ट्र कल्याण महायज्ञ एवं भजन संध्या का विशेष आयोजन किया जाएगा। मुख्य अतिथि श्री अवतार सिंह (महापौर) एवं विशिष्ट अतिथि श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे। कार्यक्रम में कवि सम्मेलन, योग सम्मेलन, प्रांणायाम, विशेषांक का प्रकाशन एवं विद्वानों तथा समाज सेवियों का उद्बोधन होगा।

- चंद्रशेखर शास्त्री, संयोजक

प्रवेश सूचना

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ में योग आदि पांच दर्शनों, उपनिषदों एवं वेद के कुछ चुने हुए अध्यायों का अध्यापन आरम्भ होने जा रहा है। प्रवेश लेकर अपनी बुद्धि का परिशोधन करें!!

प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों के लिए। आयु - कम से कम 18 वर्ष, शिक्षा - न्यूनतम 12 या समकक्ष। व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक को वरीयता। सम्पर्क करें - ***9409415011, 9409415017,***
E-mail :- darshanyog@gmail.com

सत्यार्थ प्रकाश उत्सव का विशेष आयोजन

वेद प्रचार मण्डल पश्चिम दिल्ली द्वारा 7 जुलाई 2019 को प्रात: 10 से 2 बजे तक पंचायत भवन शाहाबाद मोहम्मदपुर नई दिल्ली में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन (श्रीमती अंजलि आर्य करनाल द्वारा), बच्चों का कार्यक्रम एवं प्रवचन होंगे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, प्रधान आर्य केंद्रीय सभा एवं मुख्य वक्ता आचार्य धर्मपाल जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सतीश चड्डा जी, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, कोषाध्यक्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रमेश विधुडी जी, सांसद दक्षिणी दिल्ली, कर्नल श्री देवेंद्र सहरावत जी, विधायक, श्री विजय लोचन जी, श्री सत्यप्रकाश राणा जी, पूर्व विधायक, श्रीमती सुषमा जी, श्री रवींद्र गोदारा जी, निगम पार्षद, श्री अनिल यादव जी, श्री जयप्रकाश जी, पूर्व निगम पार्षद आदि महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। ***- बलदेव सचदेवा, प्रधान***

उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सफलता, अन्त:करण की परिशुद्धि ऐहिक सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर 15 से 22 सितम्बर 2019 तक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक सज्जनों हेतु सम्पर्क सूत्र-

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़, पत्रा - सागपुर, ता. - तलोद, साबरकांठा गुजरात-383307, मोबाइल :- 9409415011, 9409415017

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। ***- संयोजक***

शोक समाचार

श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्ता का निधन

आर्यसमाज दरियागंज, नई दिल्ली के प्रधान श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्ता जी (रंगभूमि वाले) का दिनांक 23 जनू, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ आर्यसमाज दरियागंज अंसारी रोड नई दिल्ली-110002 में तथा भजन संध्या दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के सभागार में 5 जुलाई, 2019 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों, आर्य संस्थानों के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 1 जुलाई, 2019 से रविवार 7 जुलाई, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4-5 जुलाई, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 जुलाई, 2019

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रजोकरी, नई दिल्ली-38 का 5वां वार्षिकोत्सव 30 जून, 2019 को सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ सत्तर लाख+
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें। यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी का बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

सभा द्वारा उपयोगी मोबाइल एप्प आज ही डाउनलोड करें

आर्य लोकेटर
आर्य समाज मंदिर, विद्यालय, गुरुकुल आदि आर्य संस्थाओं को मानचित्र पर देखें। यदि आपकी संस्था अभी तक इस एप्लीकेशन पर सूचीबद्ध नहीं है तो कृपया अपनी संस्था को आज ही रजिस्टर करें।
Google Play
Arya Locator

सत्यार्थ प्रकाश ऑडियो
महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विभिन्न भाषाओं में सुनने की सुविधा वाली एप्लीकेशन।
Google Play
Satyarth Prakash Audio

आर्य समाज नामावली
बच्चों के नामकरण हेतु सुन्दर एवं सार्थक वैदिक नामों का अनूठा संग्रह।
Google Play
Arya Samaj Naamawali

आर्य समाज भजनावली
ईश्वर भक्ति, मातृ पितृ भक्ति, देश भक्ति, ऋषि भक्ति के प्रेरणादायक कर्णप्रिय गीतों एवं भजनों का अद्भुत संगम।
Google Play
Arya Samaj Bhajnawali

प्रेयर मंत्र
विभिन्न अवसरों हेतु मंत्रों का उपयोगी संग्रह। जागरण मंत्र, शयन मंत्र एवं सूर्योदय / सूर्यास्त के स्थानीय समय के अनुसार संध्या मंत्रों का पाठ करने हेतु स्वतः प्रारम्भ होने वाली उपयोगी एप्लीकेशन।
Google Play
Prayer Mantra

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह